दैनिक
न्याय साक्षी

संपादकीय-खेल-व्यापार-धर्म-
खाना खजाना- राशिफल

रायगढ़, गुरूवार 02 मई 2019

www.nyaysakshi.com

संपादकीय

जाति और जनतंत्र

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के चुनाव को हमेशा उत्सुकता से देखा जाता रहा है, लेकिन इस बार मामला कुछ ज्यादा खास है। भारतीय चुनावों में अमेरिका, इंग्लैंड और विभिन्न यूरोपीय देशों की ज्यादा दिलचस्पी देखी गई है। लेकिन इस बार दक्षिण-पूर्वी एशिया और खाड़ी इलाके के कई देश इसमें काफी रुचि ले रहे हैं। उन्होंने भारत में नियुक्त अपने राजनयिकों को इस काम में लगाया है, जो अपनी कूटनीतिक सीमाओं में रहते हुए चुनावों के विभिन्न कारकों को समझने का प्रयास कर रहे हैं। जैसे, एक युवा राजनयिक को यह जिम्मेदारी दी गई कि वह यूपी के वोटिंग पैटर्न को समझे। सबकी बड़ी जिज्ञासा चुनावों में जाति की भूमिका को लेकर है। वे जानना चाहते हैं कि जाति जैसी पुरानी सामाजिक संरचना भारत जैसी तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था और आधुनिक जीवन मूल्यों वाले समाज में आखिर किस तरह अपनी निर्णायक उपस्थिति बनाए हुए है।

भारतीय समाज और इसके राजनीतिक ढांचे के बीच मौजूद विरोधाभास को डॉ. बी आर आंबेडकर ने स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही पहचान लिया था। संविधान के लोकार्पण से ठीक पहले दिए गए अपने वक्त व्य में उन्होंने साफ कहा था कि भारत ने राजनीतिक रूप से लोकतंत्र जरूर अपना लिया है। लेकिन समाज में लोकतंत्र आना आसान नहीं है क्योंकि सामाजिक पदानु म (हायरार्की) आसानी से नहीं बदलने वाली। भारत की जमीन में जाति के पाये आखिर इतनी मजबूती से क्यों धंसे हुए हैं, इस बारे में समाजशास्त्री किसी अंतिम निष्कर्ष तक नहीं पहुंच पाए हैं। आजादी के बाद कई संगठनों और नेताओं ने जाति तोड़ो आंदोलन चलाया पर सतह के नीचे उसका कोई खास असर नहीं हुआ। उस समय माना जा रहा था कि आर्थिक विकास के साथ यह पहचान अपने आप कमजोर पड़ती जाएगी। नब्बे के दशक में आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाने के बाद से यह फर्क तो पड़ा कि सार्वजनिक जीवन में जातिगत भेदभाव तेजी से कम हो हुआ। छुआछूत जैसी अमानवीय प्रथा शहरों में पूरी तरह और गांवों में अंशत: समाप्त हो गई। सार्वजनिक दायरे में इसका कोई प्रभाव नहीं रह गया। लेकिन शादी-ब्याह में जाति की भूमिका ज्यों की त्यों बनी रही और चुनाव में इसका महत्व कम होने के बजाय बढ़ता गया।

इसका कारण शायद यह है कि लगभग समान आर्थिक हैसियत वाले लोगों को अलग-अलग खेमों में गोलबंद करना कठिन होता है। ऐसे में जाति के रूप में पहले से मौजूद सुविधाजनक विभाजन का इस्तेमाल करके रातोंरात अपने वोटरों का अलग वर्ग खड़ा कर लेना पार्टियों को बहुत आसान लगता है। इस शॉर्टकट को बनाए रखने के लिए जातीय पहचान को नए सिरे से खाद-पानी मुहैया कराया जा रहा है। गनीमत है कि हमारे सिस्टम में हर किसी के लिए कुछ न कुछ उम्मीद बनी हुई है। इसके चलते बहुत सारे लोग जाति से हटकर वोट डालते हैं और जो लोग वोटिंग में जाति की अपील से प्रभावित होते हैं, वे भी बाकी समय इसको ज्यादा तवज्जो नहीं देते।

सरकार ने अप्रैल में 1,874 करोड़ की शत्रु संपत्ति बेची

नई दिल्ली (आरएनएस)। सरकार ने अप्रैल में 1,874 करोड़ की शत्रु संपत्ति बेची है। यह पहला मौका है, जब केंद्र ने शत्रु संपत्ति बेची है। सरकार ने चालू वित्त वर्ष में 90,000 करोड़ रुपये के विनिवेश का लक्ष्य रखा है। सरकार वर्ष के लिए तय विनिवेश लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ते हुए शत्रु संपत्ति की बिक्री प्रक्रिया में तेजी लाना चाहती है।

विनिवेश और दीपम की वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2019-20 के पहले महीने में विनिवेश से 2,350 करोड़ रुपये जुटाए हैं। इसमें से 476 करोड़ रुपये रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) के आईपीओ के जरिये जुटाए गए जबकि शेष 1,874 करोड़ रुपये शत्रु संपत्ति की बिक्री करने से आए हैं।

क्या है शत्रु संपत्ति

मंत्रिमंडल ने नवंबर 2018 में दीपम को शत्रु संपत्ति और शत्रु हिस्सेदारी बेचने को मंजूरी दे दी थी। शत्रु संपत्ति से आशय ऐसी संपत्ति से जिन्हें लोग छोड़कर पाकिस्तान या चीन चले गए और वे भारत के नागरिक नहीं रह गए हैं। मार्च 2019 में मंत्रिमंडल ने 'कस्टोडियन ऑफ एनिमी प्रॉपर्टी फॉर इंडिया (सीईपीआई)' के तहत आने वाली शत्रु संपत्ति को बेचने की प्रक्रिया को मंजूरी दे दी।

पिछले वित्त वर्ष में जुटाए 84,972 करोड़ रुपये

दीपम द्वारा निर्धारित संपत्ति बिक्री दिशानिर्देश के अनुसार सीईपीआई या गृह मंत्रालय संबंधित पक्षों और राज्य सरकार के परामर्श से बिक्री के लिए संपत्ति का चुनाव करता है। पिछले वित्त वर्ष में सरकार ने विनिवेश के जरिये 84,972 करोड़ रुपये जुटाए। इसमें शत्रु हिस्सेदारी की बिक्री के जरिए जुटाई गई 779 करोड़ रुपये की राशि भी शामिल हैं।

पेट्रोल, डीजल के दाम स्थि
कच्चे तेल में नरमी जारी

नई दिल्ली (आरएनएस)। पेट्रोल और डीजल के दाम में बुधवार को कोई बदलाव नहीं हुआ। एक दिन पहले तेल विपणन कंपनियों ने पेट्रोल के दाम में पांच पैसे प्रति जबकि डीजल के दाम में पांच से छह पैसे लीटर की वृद्धि कर दी थी। उधर, अमेरि कच्चे तेल का भंडार बढ़ने के कारण अंत बाजार में तेल के दाम में फिर नरमी का सिल लगातार पांचवें सत्र में जारी रहा।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के अ दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई में पेट्रो दाम पूर्ववत क्रमश: 73.13 रुपये, 75.15 78.70 रुपये और 75.90 रुपये प्रति लीट चारों महानगरों में डीजल के दाम भी य क्रमश: 66.71 रुपये, 68.45 रुपये, 6 रुपये और 70.44 रुपये प्रति लीटर बने रहे

तेल कंपनियों ने मंगलवार को डीजल के में दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई में पांच पैसे लीटर और मुंबई में छह पैसे प्रति लीटर की की थी। अंतर्राष्ट्रीय वायदा बाजार आईसीई प करूड बुधवार को पिछले सत्र के मुकाबले फीसदी की गिरावट के साथ 71.58 डॉल बैरल पर बना हुआ था। अमेरिकन पेट्रो इंस्टीट्यूट के आंकड़ों के अनुसार, बीते अमेरिका में कच्चे तेल का भंडार 68 लाख बढ़कर 46.64 लाख बैरल हो गया। अमेरि कच्चे तेल की आपूर्ति बढ़ने से तेल के द गिरावट आई है, लेकिन बाजार में असमंज स्थिति अभी बरकरार है क्यों दो मई से अ द्वारा ईरान से तेल आयात करने वाले देशों गई छूट समाप्त हो रही है और ईरान दुनिया का एक प्रमुख निर्यातक देश है।

अमेजन का भारत से ई-कॉमर्स निर्यात 2023 तक 5 अरब डॉलर करने का लक्ष्य

नईदिल्ली (आरएनएस)। ऑनलाइन मार्केटप्लेस अमेजन को अपने वैश्विक बिक्री कार्यक्रम के तहत 2023 तक भारत से ई - वाणिज्य (ई - कॉमर्स) निर्यात बढ़कर पांच अरब डॉलर पर पहुंचने की उम्मीद है। कंपनी ने मंगलवार को यह बात कही। अमेजन इंडिया के कंट्री प्रमुख अमित अग्रवाल ने बयान में कहा , अमेजन ने भारत में चार साल पहले वैश्विक बिक्री कार्यक्रम शुरू किया था। अगले पांच साल में , भारत के लिए वैश्विक परिदृश्य में भारी संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी वैश्विक बिक्री कार्यक्रम को लेकर आश्वस्त है कि लाखों भारतीय विनिर्माताओं , निर्यातकों और छोटे उद्यमों के चलते यह 2023 तक 5 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच जाएगा।

यूट्यूब को टक्कर देने के लिए वीडियो स्ट्रीमिंग क्षेत्र में उतरी एयरटेल

» लॉन्च किया विंक ट्यूब

नई दिल्ली (आरएनएस)। दूरसंचार कंपनी भारती एयरटेल ने ऑनलाइन म्यूजिक वीडियो क्षेत्र में उतरने की घोषणा की है। कंपनी का लक्ष्य दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों के 20 करोड़ संभावित उपयोक्ता हैं। भारती एयरटेल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (कंटेंट एंड एप्स) समीर बत्रा ने यह घोषणा करते हुए कहा कि दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों तथा ग्रामीण इलाकों में एक बड़ी आबादी ऐसी है जो संगीत सुनना चाहती है और साथ ही वीडियो भी देखना चाहती है। इनमें एयरटेल और गैर-एयरटेल दोनों तरह के उपयोक्ता शामिल हैं। विंक के संगीत प्लेटफार्म का दावा है कि उसके प्रयोगकर्ताओं की संख्या 10 करोड़ है। बत्रा ने कहा, ''विंक ट्यूब के उपयोक्ताओं के पास यह विकल्प होगा कि वे जो गाना देखना चाहते हैं उसका वीडियो देख सकें। यदि वे सिर्फ गाना सुनना चाहते हैं तो यह विकल्प भी उनके पास होगा।''

जेट एयरवेज के 500 पायलट और केबिन क्रू को नौकरी देगी विस्तारा

मुंबई (आरएनएस)। निजी क्षेत्र की विमानन सेवा प्रदाता कंपनी विस्तारा अपनी अब तक की सबसे बड़ी भर्ती करने जा रही है, जिसमें वह 100 पायलट्स और 400 केबिन क्रू को नौकरी देगी। कंपनी ने कहा है कि वह अधिकतर नौकरियां अस्थायी रूप से परिचालन बंद करने वाली एयरलाइन कंपनी जेट एयरवेज के लोगों को देगी। उद्योग एवं एयरलाइन के सूत्रों ने यह जानकारी दी है।

उन्होंने कहा कि जेट एयरवेज के बंद होने से एयरलाइन कंपनियों को बाजार में आसानी से लाइसेंसशुदा पायलट्स, इंजिनियर्स तथा केबिन क्रू मिल रहे हैं, जिन्हें सीधे विमान में तैनात किया जा सकता है, इससे उनके प्रशिक्षण पर समय और पैसे की बचत हो रही है।

निवेशक तथा परिचालन के लिए बैंकों से और लोन नहीं मिलने के कारण जेट एयरवेज को अंततः 17 अप्रैल को अपना परिचालन अस्थायी रूप से बंद करना पड़ा, जिसके कारण कंपनी में काम करने वाले 22 हजार कर्मचारियों का भविष्य अधर में है।

उन्होंने बताया कि इनमें से 1,300 पायलट्स और 2,000 से अधिक केबिन क्रू हैं। टाटा-सिंगापुर एयरलाइन द्वारा संचालित विस्तारा एयरवेज में केबिन क्रू की भर्ती के लिए दो दिवसीय भर्ती अभियान मंगलवार को खत्म हो गया। यह प्रक्रिया मुंबई तथा गुरुग्राम में चली।

सूत्रों ने कहा, बहुत जल्द अंतरराष्ट्रीय सेवाएं शुरू करने जा रही विस्तारा 100 पायलटों और 400 केबिन क्रू को भर्ती करने की प्रक्रिया में है। अधिकतर लोग बंद हो चुकी एयलाइन कंपनी जेट से आए हैं।

विस्तारा के प्रवक्ता ने हालांकि इसपर कोई टिप्पणी नहीं की है। इससे पहले स्पाइसजेट ने कहा था कि वह जेट के 500 कर्मचारियों को नौकरी देगी, जिनमें 100 पायलट्स होंगे।

रसोई गैस की कीमतों में हुई बढ़ोतरी
आम आदमी की बढ़ी मुश्किलें

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश में रसोई गैस की कीमत लगातार तीसरे महीने बढ़ी है और 1 मई से राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सब्सिडी वाला घरेलू गैस सिलेंडर 28 पैसे तथा बिना सब्सिडी वाला छह रुपये महँगा हो गया।

देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन से मिली जानकारी के अनुसार, बुधवार से दिल्ली में सब्सिडी वाला 14.2 किलोग्राम का गैस सिलिंडर 496.14 रुपये का हो गया। अप्रैल में इसकी कीमत 495.86 रुपये थी। बिना सब्सिडी वाले घरेलू गैस सिलिंडर की कीमत 706.50 रुपये से बढ़कर 712.50 रुपये हो गई।

कोलकाता, मुंबई और चेन्नई में भी सब्सिडी वाला गैस सिलिंडर 29 पैसे तक और बिना सब्सिडी वाला छह-छह रुपये महँगा हुआ है। फरवरी के बाद यह लगातार तीसरा महीना है जब रसोई गैस महँगी हुई है। कोलकाता में सब्सिडी वाला गैस सिलिंडर अब 499 रुपये की बजाय 499.29 रुपये का, मुंबई में 493.57 रुपये की बजाय 493.86 रुपये का और चेन्नई में 483.74 रुपये की बजाय 484.02 रुपये का मिलेगा। बिना सब्सिडी वाला गैस सिलिंडर आज से कोलकाता में 738.50 रुपये का, मुंबई में 684.50 रुपये का और चेन्नई में 728 रुपये का मिल रहा है।

बता दें कि इससे पहले 1 अप्रैल को रसोई गैस के दाम में इजाफा किया गया था।

आज का राशिफ

मेषः- व्यावसायिक मामल फैसले लेते वक्त आपको इ सोच से काम करना सहजता और तेजी के साथ मुद्दों का सफलतापूर्वक स करेंगे।

वृषभः- आर्थिक मामले तकदीर आपका साथ स्थापित कारोबार का वि होगा। त्रिपक्षीय साझेदारी कर स्थिति बनेगी, लेकिन निजी के मामले में त्रिपक्षीय अनुकूल साबित नहीं होंगे।

मिथुनः- आपने पहले से उम्मीदें संजो रखी हैं या फिर जैसा चाह रहे होंगे, उनके पू होने से आप हताश हो सकते

कर्कः- युवाओं की ऊर्जावान महसूस करेंगे। का में आप युवा लोगों को प्रोत्स करने में सफल रहेंगे।

सिंहः- कारोबार में सफ मिलेगी और सौभाग्य भी साथ इस कारण आप खुद खरीददारी कर सकते कार्यक्षेत्र में आप ईमानदा काम करना चाहेंगे।

कन्याः- आपके परिवेश मे से बदलाव हो रहे हैं। नए अ सामने आएंगे। कामयाबी पा लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।

तुलाः- अतीत के एक दौ समाप्ति हो रही है और एक दौर शुरू होने वाला है। जैसे ही व्यावसायिक परियोजना को कर लेते हैं, वैसे ही आप हल तनावरहित महसूस करेंगे।

वृश्चिकः- विभिन्न शख्सियत बीच आप अलग छाप छोड़ सफल रहेंगे। निजी व व्यवस मामले में ऊर्जावान होकर का परिचय देंगे।

धनुः- जिंदगी जो भी घ आपके समक्ष पेश कर रह उनका भरपूर लुफ्त उठाएं, आप अतीत के अपराध नकारात्मक विचारों आदि को सकेंगे।

मकरः- असमंजस के छंटेंगे। पुराने तौर-तरीकों में करेंगे और आपके दृष्टिकोण नयापन झलकेगा।

कुंभः- अतीत और भविष्य योजनाओं में न डूबकर वर्तमान में रहें और हर लम आनंद उठाएं।

मीनः- लोगों से संवाद स करने का वक्त है। व्यवस और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े के साथ संपर्क स्थापित करें

टेक्सास का लड़का 9.98 सेकेंड में 100 मीटर दौड़ा

लंदन (आरएनएस)। व्हाइट लाइटनिंग नाम से मशहूर टेक्सास के एक हाई स्कूल स्प्रिंटर ने एक स्कूली इवेंट में 100 मीटर दौड़ 9.98 सेकेंड में पूरी कर सनसनी फैला दी है।

समाचार पत्र डेली मेल के मुताबिक 18 साल के मैथ्यू बोलिंग ने हाउस्टन के स्ट्रेक जीसुट कॉलेज प्रेप के लिए हिस्सा लेते हुए टेक्सास रीजन थ्री-6ए ट्रैक एवं फील्ड इवेंट में शनिवार को यह कारनामा किया।

मैथ्यू के नाम नया अनाधिकारिक रिकार्ड दर्ज हो गया है और वह 20 साल से कम उम्र में इतने कम समय में 100 मीटर दूरी नापने वाले सबसे तेज अमेरिकी धावक बन गए हैं।

बीते सप्ताह मैथ्यू ने अपने ट्विटर पर कहा था कि उसने अपना व्यक्तिगत श्रेष्ठ समय हासिल किया है और यह समय 9.98 सेकेंड है। साथ ही उसने यह भी लिखा था कि उसने नया स्कूल रिकार्ड भी कायम किया है।

मैथ्यू का यह समय हालांकि आधिकारिक रिकार्डबुक में शामिल नहीं हो सका क्योंकि जब वह दौड़ रहा था तब उसके पीछे से हवा की गति 4.2 मील प्रति घंटे थी।

इस स्पर्धा में विश्व रिकार्ड जमैका के उसेन बोल्ट के नाम है। बोल्ट ने 100 मीटर दौड़ 9.58 सेकेंड में पूरी की थी। 200 मीटर का भी विश्व रिकार्ड बोल्ट के नाम ही है। बोल्ट ने यह दूरी 19.19 सेकेंड में पूरी की है।

हॉकी इंडिया ने श्रीजेश का नाम खेल रत्न के लिए भेजा

नई दिल्ली (आरएनएस)। हॉकी इंडिया (एचआई) ने बुधवार को अनुभवी गोलकीपर पीआर श्रीजेश का नाम देश के सर्वोच्च खेल सम्मान-राजीव गांधी खेल रत्न के लिए नामांकित किया है। एचआई ने श्रीजेश के साथ-साथ इस साल के अर्जुन पुरस्कार, मेजर ध्यानचंद अवार्ड और द्रोणाचार्य अवार्ड के लिए भी खिलाड़ियों के नामों का ऐलान किया। अर्जुन पुरस्कार के लिए चिंगलेनसाना सिंह, आकाशदीप सिंह और महिला टीम से दीपिका का नाम खेल मंत्रालय को भेजा गया है। इसी तरह, लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए दिए जाने वाले मेजर ध्यानचंद अवार्ड के लिए डॉ. आरपी सिंह और संदीप कौर का नाम भेजा गया है।

केसर बर्फी बनाने की विधि ...

सामग्री :

2 कप खोया
1 कप चीनी
1 टीस्पून इलायची पाउडर
1/4 टीस्पून पीला फूड कलर 1 टीस्पून घी
1 टीस्पून केसर
1 टेबल स्पून दूध
2-3 चॉदी के वर्क

विधिः

सबसे पहले खोया और चीनी एक नॉन स्टिक कढ़ाई में डाल कर भूनना शुरू करें फिर खोया और चीनी अच्छे से घोल कर मिल न जाये और थोड़ा टाइट हो जाए इसके बाद इसमें दूध मे घुला हुआ केसर मिला लें और कलर भी मिला लें। अब इसमें इलायची पाउडर डालें और अच्छे से मिक्स कर लें। इसके बाद एक थाली में घी लगा कर चिकना कर लें और बर्फी वाला बेटर थाली में डालकर फैला दें और अब उसपर चॉदी का वर्क लगा लें। फिर बर्फी को ठंडा होने पर काट लें और सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य-51

बाएं से दाएं
1. समाप्ति, खात्मा 3. रोगी, बीमार 5. गंभीरता, गहराई 6. बलपूर्वक, जबरदस्ती, व्यर्थ 9. लानत, तिरस्कार सूचक एक शब्द 10. लक्ष्मी, कमला 11. औषधालय 13. नाव खेने का लकड़ी का यंत्र 14. सतह, 'लेवल' 15. बिजली, तड़ित 17. चौकसी, सावधानी, बचाव 19. कहने वाला, वाचनकर्ता 20. सुंदर, अच्छा, बढ़िया 21. लगातार, तड़-तड़ करते हुए।

ऊपर से नीचे
1. शरीर का कोई भाग, शरीर 2. खोज-बीन, जांच-पड़ताल 3. वोट देने का हक 4. जो अत्यधिक शक्तिशाली व कठोर प्रकृति का हो, दृढ़, मजबूत 7. बरसात, पावस, बारिश 8. भरना, अटना, अंदर करना 12. घटना, हादसा, दुर्घटना 13. लिबाज़, पहनने का ढंग 16. नीला वस्त्र पहने वाला, नीला वस्त्र 17. ऐक्य, एक होने का भाव 18. दिल्ली स्थित प्रसिद्ध जेल।

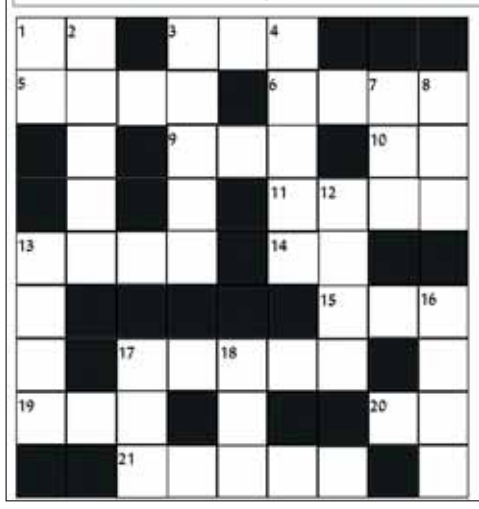

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 50 का हल

वा	स्ता			सि	स	की		
जि		ल	प	ट		मा	चि	स
ब	द	ला		क			ल	
		ट		नी	ल	क	म	ल
ता	ली		का		की			हू
क		स	रो	का	र			लु
झां		ज	बा	न		म	सी	हा
क	च	ना	र		भा	र्या		न
	मं			ज	र	दा		

सू-दोकू-51

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.50 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6